॥ श्रीश्रीगुरु-गौराङ्गौ जयतः ॥

श्री श्री भागवत-पत्रिका

राष्ट्रभाषा हिन्दीमें श्रीश्रीरूप-रघुनाथकी वाणीकी अनुपम वाहिका

वर्ष—१७ संख्या—१-३ प्रबन्ध क्रमांक-४

नित्यलीलाप्रविष्ट ॐ विष्णुपाद अष्टोत्तरशतश्री
श्रीमद्भक्तिप्रज्ञान केशव गोस्वामी महाराजको समर्पित
एवं
नित्यलीलाप्रविष्ट ॐ विष्णुपाद अष्टोत्तरशतश्री
श्रीमद्भक्तिवेदान्त नारायण गोस्वामी महाराजके
आदेश-निर्देश और प्रेरणानुसार

श्रील भक्तिसिद्धान्त सरस्वती ठाकुर 'प्रभुपाद' का वाणी-वैभव

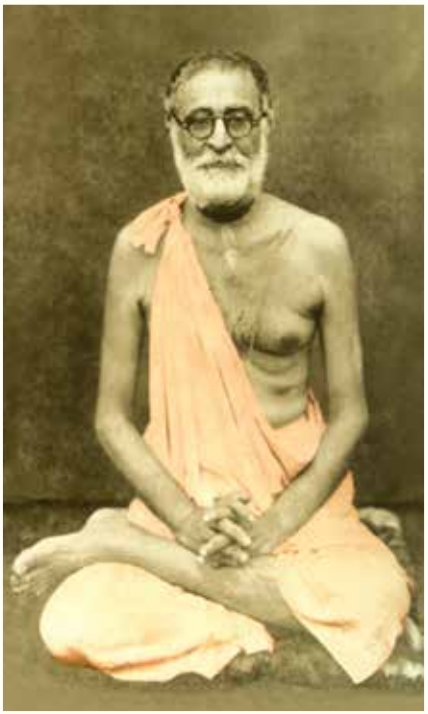

श्रीगुरुतत्त्व और श्रील प्रभुपाद

(वर्ष—१७, संख्या—१-३, प्रबन्ध क्रमांक-३ से आगे)

प्रश्न ५—गुरुका कार्य कौन कर सकता है?

उत्तर—कृष्णतत्त्वविद् कृष्णभक्त ही गुरु हैं। कर्मी, योगी तथा निर्विशेष ब्रह्मज्ञानी अभक्त होनेके कारण कभी भी गुरु नहीं हो सकते। Personality of Godhead के उपासक ही गुरु हो सकते हैं। परन्तु श्रीकृष्णके सेवक अभिमानी (कृष्णके उपासक) भी गुरु नहीं हो सकते, यदि वे अपनेको अपने शिष्यका शिष्य न मानें। जो स्वयंको वैष्णव मानता है, वह branded अवैष्णव है। जो अपनेको गुरु या श्रेष्ठ मानते हैं, वे गुरु होनेके योग्य नहीं हैं। जो अपनेको शिष्यका शिष्य मानते हैं, केवल वे ही गुरु होनेके योग्य हैं। जिनकी गुरुके प्रति वैसी ही दृढ़ भक्ति है जैसी उनकी भगवान्‌के प्रति है, ऐसे गुरुनिष्ठ भक्त ही गुरुका कार्य करनेमें समर्थ हैं। अपने प्रति वैष्णव अभिमान रहनेपर गुरु नहीं हुआ जा सकता। इसलिए जो गुरुका

कार्य करते हैं, वे न तो कभी अपनेको वैष्णव या गुरु कहते हैं तथा न ही ऐसा मानते हैं। इसीलिए हमारे श्रीगुरुदेव कभी भी अपनेको गुरु नहीं कहते थे, इसीलिए महाजनोंने गाया है—

आमि त वैष्णव, ए बुद्धि हइले,
अमानि ना हब आमि।
प्रतिष्ठाशा आसि, हृदय दूषिबे,
हइब निरयगामी॥
तोमार किङ्कर, आपने जानिब,
गुरु अभिमान त्यजि।
तोमार उच्छिष्ट, पद-जल-रेणु,
सदा निष्कपटे भजि॥
निजे श्रेष्ठ जानि, उच्छिष्टादि दाने,
हबे अभिमान भार।
ताइ शिष्य तव, थाकिया सर्वदा,
ना लइब पूजा कार॥

अर्थात् हे गुरुदेव! यदि मेरी ऐसी बुद्धि हो गयी कि मैं वैष्णव हो गया हूँ, तो फिर मैं कभी भी अमानी (अपने मानकी कामना न करनेवाला) नहीं हो पाऊँगा। प्रतिष्ठा प्राप्त करनेकी आशा मेरे हृदयमें आकर हृदयको दूषित कर देगी, जिसके फलस्वरूप मैं नरकगामी होऊँगा। इसलिए मैं गुरु होनेका अभिमान त्यागकर सर्वदा ही अपनेको आपका दास मानता रहूँगा तथा सर्वदा ही निष्कपटरूपसे आपका उच्छिष्ट प्रसाद, चरणामृत, चरणधूलिको ग्रहण करता रहूँगा। यदि मैं अपनेको श्रेष्ठ मानकर दूसरोंको अपना उच्छिष्ट प्रदान करूँगा, तो प्रबल अभिमानके भारसे दब जाऊँगा। इसीलिए [हे गुरुदेव!]मैं सर्वदा आपका शिष्य होकर ही रहूँ तथा किसीकी भी पूजा ग्रहण न करूँ।

महाभागवत ही गुरु होते हैं। जो सर्वत्र गुरु-दर्शन करते हैं, ऐसे महाभागवत ही गुरुका कार्य कर सकते हैं। वे लघुको गुरु कर सकते हैं तथा सभीको कृष्णभक्त बना सकते हैं। स्वयं भक्त हुए बिना दूसरेको भक्त नहीं बनाया जा सकता। इसलिए गुरु होनेका तात्पर्य है—कृष्णभक्त होना। जो गुरु होना चाहता है, उसे सब समय अपनी समस्त इन्द्रियोंको कृष्णकी सेवामें नियुक्त करना होगा। गुरुनिष्ठ न होनेपर अर्थात् गुरुके प्रति दृढ़निष्ठा न रहनेपर गुरुका कार्य करनेका अधिकार प्राप्त नहीं हो सकता।

महाभागवत तृणसे भी अधिक दीन-हीन होते हैं, वे अपनेको सबसे छोटा मानते हैं। शिष्य होकर मैंने बहुत दिनोंतक दासता की, अब शिष्यगिरि अच्छी नहीं लगती, अतः अब मुझे गुरुगिरि करनी चाहिए—वे ऐसा कभी नहीं सोचते। वे गुरुका कार्य तो करते हैं, परन्तु उनके हृदयमें गुरु होनेका अभिमान कदापि नहीं रहता।

हमारे जैसे दुर्भागे जीवोंका उद्धार करनेके लिए भगवान्ने परजगत् (अपने धामसे) जिन महापुरुषोंको मनुष्य वेशमें इस जगत्में भेजा है, जो त्रितापग्रस्त मनुष्योंका उद्धारकर उन्हें भगवान्के धाममें भेज सकते हैं, भगवान्के ऐसे निजजन जो भगवान्के दूत एवं वैकुण्ठवाणीके वाहक हैं, केवल वे ही गुरुका कार्य कर सकते हैं।

भोगप्रवृत्ति एवं त्यागप्रवृत्तिकी बलि देनेके लिए जिनकी वाणीरूपी खड्ग[तलवार] सर्वदा प्रस्तुत है, वे ही वास्तवमें साधु-गुरु हैं।

विषयविग्रह कृष्णकी सेवाके अतिरिक्त जिनका अन्य कोई कार्य, बुद्धि या दर्शन नहीं है, वे ही श्रीगुरुपादपद्म हैं। वे किसीकी भी चापलूसी नहीं कर सकते, वे वास्तव सत्यके निर्भीक प्रचारक हैं।

जो हरिकथाके अतिरिक्त अन्य बातें कभी भी नहीं बोलते, जो भगवान्की सेवाके अतिरिक्त अन्य किसी भी धर्मका उपदेश नहीं देते हैं, जो २४ घन्टेमें एक सेकेण्डके लिए भी अन्य कार्य नहीं करते हैं, वे ही गुरु होनेके योग्य हैं।

An insincere hypocrite (भण्ड) cannot be a guru. Mundane activity (जागतिक कार्य) में जिसकी aspiration (आकाङ्क्षा) है, वह कभी भी गुरु नहीं हो सकता। Pseudo guru should be turned out and exposed. (कृत्रिम या नकली गुरुका मुखौटा उतार देना चाहिए)। भगवान्‌के चरणोंमें जो समस्त जीव surrender (समर्पित) कर रहे हैं, बीच मार्गमें यदि कोई उन्हें अपनी सेवामें लगाता है, कनक-कामिनी प्रतिष्ठा संग्रहमें नियुक्त करता है, तो उसे ठग जानकर सम्पूर्ण रूपसे उसका त्याग करना होगा। ऐसे असत् व्यक्तिकी कथा नहीं सुननी चाहिए। विषयविग्रहकी सेवाकी वस्तुको बीच मार्गमें आत्मसात्‌कारी (अपने भोगमें लगानेवाला) व्यक्ति कभी भी गुरु कहलाने योग्य नहीं है।

शास्त्र कहते हैं—

इहा यस्य हरेर्दास्ये कर्मणा मनसा गिरा।
निखिलास्वप्यवस्थासु जीवन्मुक्तः स उच्यते॥

(नारदीय पुराण)

जिनके कर्म, मन, वाणी भगवान्‌की सेवामें नियुक्त हैं, समस्त अवस्थाओंमें वे जीवन्मुक्त कहलाते हैं। ऐसे लोग ही गुरु होनेके योग्य हैं।

भगवान्‌की सेवा छोड़कर जो social service के लिए तैयार रहते हैं, ऐसे नास्तिकोंका सङ्ग कभी नहीं करना चाहिए। ऐसे व्यक्ति कभी भी अपना या दूसरोंका कल्याण नहीं कर सकते। ऐसी social service करते-करते वे मायाके गर्तमें गिर जाते हैं एवं सभीको विपत्तिमें डाल देते हैं।

प्रश्न ६—सद्‌गुरुके क्या लक्षण हैं?

उत्तर—जिनका सर्वत्र भगवत्-दर्शन, भगवत्-सम्बन्ध-दर्शन, सर्वत्र गुरु-दर्शन होता है, जो तृणसे भी अधिक दीन-हीन, वृक्षके समान सहिष्णु, अमानी तथा मानद होकर निरन्तर हरिकीर्त्तनमें रत तथा तन्मय रहते हैं, ऐसे कृष्णप्रेष्ठ महापुरुषोंका सङ्ग तथा उनकी सेवाके द्वारा ही हमारे मङ्गलका मार्ग खुल सकता है। महाभाग्यके फलसे ऐसे सद्‌गुरु प्राप्त होते हैं। मायाके दासको गुरुके रूपमें सजाकर भोगबुद्धिके द्वारा गौरसुन्दरके निकट नहीं पहुँचा जा सकता। श्रीगौरसुन्दरके इस जगत्‌में प्रकटलीलामें न रहनेपर भी यदि निरन्तर निष्कपट साधु-गुरुके सङ्गमें रहा जाय, उनकी चित्तवृत्तिमें अपनी चित्तवृत्तिको dovetailed (संलग्न) कर सकें, उनकी इच्छाके साथ अपनी इच्छाको मिला सकें, यदि ऐसे कृष्णतत्वविद् श्रीगुरुदेवके चरणकमलोंमें शरणागत हो सकें, उनके चरणोंमें पूर्णरूपसे आत्मसमर्पण कर सकें, तो ऐसे उत्तम सङ्ग, सेवा एवं आनुगत्यके द्वारा ही हमारा मङ्गल होगा।

जो भगवान्‌को ठगनेके लिए माला-जपका अभिनय करते हैं या खूब चिल्लाते हैं, परन्तु प्रत्येक शब्दमें कृष्णदर्शन, प्रत्येक उच्चारणमें साक्षात् गौरसुन्दरका दर्शन नहीं करते हैं, हमें ऐसे तथाकथित गुरुका सङ्ग नहीं करना चाहिए। समस्त पाण्डित्यकी अन्तिम सीमा कृष्ण-सम्बन्ध है। यदि गुरुके आनुगत्यमें हमारी भगवान्‌की सेवा करनेकी चित्तवृत्ति उदित होती है, तब समग्र जगत्‌को हम भगवान्‌की सेवाके उपकरणके रूपमें देखेंगे। जगत्‌की समस्त वस्तुओंके द्वारा भगवान्‌की सेवा करेंगे, तभी हमारा मङ्गल होगा।

('श्रील प्रभुपादके उपदेशामृत' नामक ग्रन्थसे अनुदित)

श्रीश्रीभागवत-पत्रिकाका संग्रह — पुराने अङ्कोंको डाउनलोड किजिए।

प्रस्तुति – श्रीश्रीभागवत-पत्रिका सेवक-मण्डली